भक्तिपरक पद ८९, शृङ्गार एवं विरह-मिलन सम्बन्धी पद ९०, आध्यात्मिक पद ९१, दार्शनिक पद ९२, योग साधनापरक पद ९३, उपदेशात्मक पद ९४।

तृतीय अध्याय : ९५-१६५

आनंन्दघन की विवेचन-पद्धति—

प्रतीकात्मकता ९८, अमूर्त तत्त्वों का मानवीयकरण १०२, रूपकात्मक पद्धति १११, रहस्यात्मकता १२०, अनेकांत-दृष्टि १२८, निश्चय और व्यवहारमूलक नय-पद्धति ११२, समन्वयात्मक दृष्टि १४७, अपरोक्षानुभूति १५८।

चतुर्थ अध्याय : १६६-२५०

आनन्दघन के रहस्यवाद के दार्शनिक आधार—

आत्मज्ञान की जिज्ञासा १६६, आत्मा का स्वरूप १७०, आत्मा १७१, आत्मा का लक्षण १७२, कर्तृत्व १७८, भोक्तृत्व १७९, निषेधात्मक रूप से आत्मा के स्वरूप पर विचार १८०, आत्मा का अनिर्वचनीय स्वरूप १८२, नित्यवाद और अनित्यवाद १८४, नित्य आत्मवाद १८५, अनित्य आत्मवाद, आत्मा की विभिन्न अवस्थाएँ १९३, आत्मा की स्वाभाविक एवं वैभाविक अवस्थाएँ १९४, बहिरात्मा, अन्तरात्मा और परमात्मा २०१, जैनेतर परम्परा में आत्मा की अवस्थाओं का चित्रण २०३, निद्रा, स्वप्न, जाग्रत और तुरीय २१६, बन्धन (दुःख) और उसका कारण २२०, प्रकृतिबन्ध २२७, स्थितिबन्ध २२९, अनुभागबन्ध २२९, प्रदेशबन्ध २२९, कर्म की अवस्थाएँ २२९, बन्ध २२९, उदय २३०, उदीरणा २३०, सत्ता २३०, बन्धन का कारण २३०, आत्मा का साध्य—मुक्ति, आनन्द २३५, मुक्ति के उपाय २४९।

पंचम अध्याय : २५१-२७०

आनन्दघन का साधनात्मक रहस्यवाद—

रत्नत्रय की साधना २५१, सम्यग्दर्शन २५२, सम्यग्दर्शन के विविध रूप २५२, (अ) दृष्टिपरक अर्थ में २५२, (ब) तत्त्व श्रद्धा-

परक अर्थ में २५२, (स) श्रद्धापरक अर्थ में २५३, सम्यग्दर्शन का लक्षण एवं स्वरूप २५३, सम्यक् ज्ञान २५६, सम्यक् चारित्र २५८, भक्ति योग की साधना : जैन भक्ति का स्वरूप २६०, योग साधना २६२, योग साधनापरक शब्दावली २६२, योग का स्वरूप २६३, योग के विविध भेद २६३, हठयोग २६३, लययोग २६४, राजयोग २६५, यम और नियम २६५, आसन २६६, प्राणायाम २६६, प्रत्याहार २६६, धारणा २६७, ध्यान २६७, समाधि २६८, मन्त्रयोग २६८, जैन योग २६९, अवंचक त्रय योग साधना २६९।

षष्ठ अध्याय : २७१–३३५

आनन्दघन का भावात्मक रहस्यवाद—

भावात्मक रहस्यवाद में अनुभूति का महत्त्व २७१, रहस्यवाद की अवस्थाएँ २७५, प्रेम और विरह का सम्बन्ध २७८, अनन्य प्रेम २७८, विरह का स्वरूप २८४, विरह के द्वारा वेदना की तीव्रता २८५, विरह के अश्रुपात २८८, दर्शन की उत्कण्ठा २९९, मिलन की उत्कण्ठा ३०३, मिलन की प्रतीक्षा ३०५, निराशा में आशा की किरण ३०९, विघ्न की अवस्था ३१३, माया ३१४, ममता ३१७, परमात्म दर्शन में बाधक घाती कर्म-पर्वत ३१८, मिलन की अवस्था ३२१, आत्म-समर्पण की अवस्था ३२६, तादात्म्य अथवा आत्मोपलब्धि की अवस्था ३३१।

सहायक ग्रन्थ-सूची : ३३६–३५२